हिन्दू संगठन और सत्तावादी राजनीति

मधुकर दत्तात्रेय देवरस
(बालासाहब देवरस)

जागृति प्रकाशन, नौएडा-२०१३०१

परिशिष्ट-१

आपात्काल में प्रधानमन्त्री को लिखा प्रथम पत्र

श्रीमती इन्दिरा गाँधीजी,
पंतप्रधान, भारत
नई दिल्ली।

यरवदा मध्यवर्ती कारागृह
पुणे-६
दिनांक-२२.८.१९७५.

सप्रेम नमस्कार,

दि० १५ अगस्त, १९७५ को दिल्ली के लालकिले से राष्ट्र को सम्बोधित करते हुए जो भाषण आपने किया, उसे मैंने आकाशवाणी से, यहाँ कारागृह में गौर से सुना। आपका भाषण समयोचित एवं संतुलित हुआ और इसलिये यह पत्र लिखने को मैं प्रवृत्त हुआ हूँ।

मुझे दि० ३०.६.७५ को नागपुर में स्थानबद्ध किया गया। उसके कुछ दिनों बाद मुझे नागपुर से पूना लाकर कारागृह में रखा गया है। उसके अनन्तर दि० ४.७.७५ को केन्द्र सरकार ने एक विशेष आदेश निकालकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर प्रतिबन्ध लगाया। प्रतिबन्ध के सम्बन्ध में अखबारों से जो जानकारी मिली है, उससे ऐसा मालूम होता है कि संघ के, उसके स्वयंसेवकों के एवं उसके जिम्मेदार कार्यकर्त्ताओं के कारनामे, देश की अन्तर्गत सुरक्षितता, सार्वजनिक शान्तता एवं व्यवस्था में बाधास्वरूप हैं, ऐसे कारणों को देखकर संघ पर प्रतिबन्ध लगाया गया है। पूरे देश में अलग-अलग स्थानों पर अनुमानतः संघ के २३,००० अधिकारियों तथा कार्यकर्त्ताओं को स्थानबद्ध किया गया है। अखबारों में आई जानकारी से ही यह विदित हुआ है।

,दरमियान के समय में आपके और कुछ वरिष्ठ नेताओं तथा अधिकारियों के वक्तव्य और अखबारों को दी गई भेंटवार्ताएँ पढ़ने को मिलीं। उसी संक्षिप्त जानकारी के आधार पर यह पत्र आपको लिख रहा हूँ।

संघ पर प्रतिबन्ध लगाने का निश्चित कौन-सा कारण है, इसका ठीक से आकलन प्रतिबन्ध के आदेश में नहीं होता। देश की आन्तरिक सुरक्षा, सार्वजनिक शान्तता एवं व्यवस्था को खतरा पहुँचे, ऐसा कोई भी काम कभी भी रा० स्व० संघ ने नहीं किया है। अखिल हिन्दू समाज को एकरस, स्वत्वपूर्ण एवं संगठित करना, यह संघ का हेतु है। समाज में अनुशासन का निर्माण हो, ऐसा भी संघ का प्रयत्न है। उसी के अनुरूप वैचारिक मार्गदर्शन संघ में किया जाता है। साथ ही उसी के लिये उपयुक्त ऐसी कार्यपद्धति का अवलम्ब किया गया है। अतः सार्वजनिक शान्तता, व्यवस्था व अंतर्गत सुरक्षा को बाधा पहुँचाने जैसी कोई बात संघ में नहीं है।

संघ पर कुछ लोग, कभी-कभी आरोप करते हैं। उन सभी आरोपों का खण्डन करना इस पत्र में सम्भव नहीं। फिर भी यह स्पष्ट करना तो आवश्यक है कि संघ ने कभी भी हिंसाचार (वायलेन्स) किया नहीं। न ही वैसी सीख संघ ने कभी किसी को दी है। संघ ऐसी बातों में विश्वास नहीं करता। संघ के स्वयंसेवकों ने तोड़-फोड़, हिंसा एवं अत्याचारपूर्ण काम किए, ऐसा पिछले ५० वर्षों में एक भी उदाहरण देखने को नहीं मिला। देश में दंगा-फसाद,

इसकी अनेक घटनायें हुईं। किन्तु उनमें स्वयंसेवकों का हाथ था, ऐसा किसी भी न्यायालय के निर्णय से अथवा सरकार द्वारा नियुक्त किसी आयोग की रिपोर्ट से प्रतीत नहीं होता। कारण स्पष्ट है कि संघ ने कभी ऐसा कृत्य नहीं किया। इस प्रकार की संघ की भूमिका या सीख नहीं है।

फिर भी संघ के सम्बन्ध में दूषित पूर्वाग्रह होने से कुछ लोग संघ पर मिथ्या आरोप लगाते हैं। उदाहरणस्वरूप स्व० ललितनारायण मिश्र जी की हत्या में संघ का सम्बन्ध बताने का प्रयास कुछ लोगों ने जल्दबाजी में किया। अब तो जाँच-पड़ताल के बाद यह स्पष्ट हो गया है कि, इस घटना से संघ का कतई सम्बन्ध नहीं है। गाँधी जी की हत्या से भी संघ का सम्बन्ध जोड़ने का मिथ्या प्रयत्न, अभी भी कुछ लोग करते हैं। वस्तुतः इस घटना से संघ का किंचित्मात्र भी सम्बन्ध नहीं था, यह साबित हो चुका है। इसलिये उसके सम्बन्ध में इस पत्र में अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है। संघ के सभी पदाधिकारी समाज के प्रतिष्ठाप्राप्त नागरिक हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर सांप्रदायिकता का आरोप करने वाले भी कुछ लोग हैं। पर उनका यह आरोप भी निराधार है। यद्यपि संघ का कार्यक्षेत्र संप्रति केवल हिन्दू समाज तक ही सीमित है, फिर भी किसी अहिन्दू के खिलाफ कुछ भी, संघ में सिखाया नहीं जाता। संघ में मुसलमानों का द्वेष करना सिखाया जाता है, यह कहना भी सर्वथा असत्य है। इस्लाम धर्म, मोहम्मद पैगम्बर, कुरान तथा ईसाई धर्म, ईसामसीह, बाइबिल इनके सम्बन्ध में संघ में अनुचित शब्द का भी प्रयोग नहीं होता। इतना ही नहीं बल्कि 'सर्वधर्मसमभाव' याने 'एकं सद्विप्राः बहुधा वदन्ति' यह जो हिन्दुओं की विशेषता है, उसी को संघ सर्वोपरि मानता है। मुसलमान, ईसाई, पारसी आदि अन्यान्य धर्मी लोगों से संघ के अनेक स्वयंसेवकों के अच्छे, आत्मीयतापूर्ण सम्बन्ध हैं। हिन्दू समाज एवं अहिन्दू समाज— इनकी सामाजिक समस्यायें भिन्न हैं। अतः रा० स्व० संघ ने अपना कार्य हिन्दू समाज तक ही मर्यादित रखा है। हिन्दुओं में जातिभेद, भाषाभेद और अन्य कारणों से जो उच्च-नीचता, परस्पर-विरोध एवं अलगाव की भावना पैदा हो गई है, उसका निर्मूलन कर, सारा हिन्दू समाज, एकात्म, संगठित करने का संघ का प्रयत्न है। इस कार्य की आत्यंतिक आवश्यकता आपको भी मंजूर होगी। सांप्रदायिक व जातीय समझा जाने जैसा संघ का स्वरूप नहीं है, यह इससे विदित हो सकता है। सबको अपनी उपासना-पद्धति की स्वतंत्रता रहे, ऐसी ही संघ की धारणा है।

हिन्दू समाज के प्रत्येक व्यक्ति को उत्तम नागरिक, देशभक्त एवं सच्चरित्र बनाने का कार्य रा० स्व० संघ निस्वार्थभाव से कर रहा है। अपने ही शासन पर उस पर प्रतिबन्ध लगे, यह तो मात्र दैवदुर्विलास है।

वनवासियों, पददलितों एवं गरीबों सहित सारे समाज की स्थिति सुधारने का कार्य तुरन्त होने जैसा नहीं है। यह मार्ग प्रदीर्घ, त्यागपूर्ण एवं कंटकाकीर्ण है। इस कार्य को करने के लिये अनेक के सहयोग की आवश्यकता है। 'समाज की सच्ची शक्तियाँ अपने-अपने क्षेत्र में, इस कार्य में नेकी से लग जानी चाहिएँ' ऐसा जो आपने अपने १५ अगस्त के भाषण में सारे समाज को आह्वान किया वह समयोचित ही था। रा० स्व० संघ का कार्य समूचे भारत में सब दूर फैला हुआ है, उसमें समाज के सभी वर्गों, स्तरों के लोग हैं। अनेक त्यागी

कार्यकर्ता संघ में हैं। संघ का सारा कार्य निस्वार्थ भावना पर आधारित है। संघ की ऐसी शक्ति का योजनापूर्वक उपयोग देश के उत्थान के लिये होना जरूरी है।

संघ के सम्बन्ध में पूर्वाग्रह छोड़कर आप विचार करें, ऐसी प्रार्थना है। प्रजातंत्रीय देशों में संगठन स्वातंत्र्य का जो मूलभूत अधिकार होता है, उसको ध्यान में लेकर रा० स्व० संघ पर जो प्रतिबन्ध है, उसे हटाएं, ऐसा मेरा आपसे निवेदन है। आपको उचित जान पड़े, तो आपसे मिलने में मुझे आनन्द ही होगा।

भवदीय
मधुकर दत्तात्रेय देवरस

परिशिष्ट-२

आपात्काल में प्रधानमन्त्री को लिखा द्वितीय पत्र

आदरणीय श्रीमती इन्दिरा गाँधीजी,
प्रधानमंत्री, भारत सरकार,
नई दिल्ली.

यरवदा मध्यवर्ती कारागृह
पुणे ६
दिनांक-१०.११.७५

सादर नमस्कार,

उच्चतम न्यायालय के पाँचों न्यायाधीशों ने आपका चुनाव वैध ठहराया, इसके लिये आपका हार्दिक अभिनन्दन।

मैंने दि० २२.८.७५ को आपको एक पत्र यरवदा कारागृह में से लिखा था। वह पत्र आपको सीधा भेजा जाना चाहिए था, किन्तु ऐसा न होकर वह महाराष्ट्र शासन की ओर गया और वहाँ से दि० ६.९.७५ को आपको भेजा गया, ऐसा मुझे बतलाया गया है। वह आपको मिला ही होगा। आपकी ओर से उस पत्र के उत्तर की मैं प्रतीक्षा कर रहा था।

दि० २२.८.७५ के मेरे पत्र में उल्लिखित बातों का पुनरुच्चारण मैं अभी इस पत्र में नहीं करूँगा। किन्तु दरमियान के समय में दि० २२.७.७५ को संसद में किए आपके भाषण की पुस्तिका एवं आपात्काल के समर्थन में दिये कारणों की सरकारी पुस्तिकाओं के मराठी संस्करण मेरे देखने में आये।

आपके भाषण में और इन पुस्तिकाओं में संघ के सम्बन्ध में गलतफहमियों पर आधारित अनेक विधान किये हैं। वे निश्चय ही गलत हैं।

उनमें संघ के भूतपूर्व सरसंघचालक कै० प० पू० गोलवलकरजी के 'अवर नेशनहुड डिफाइण्ड' और 'बञ्च आफ थाट्स' इन पुस्तकों में से कुछ वाक्य उद्धृत किये हैं। महात्मा गांधी एवं पंडित जवाहरलाल नेहरू जी के समान ही कै० पू० गोलवलकरजी एक श्रेष्ठ विचारक थे। संघ के प्रत्यक्ष विचारों के अलावा अन्य विषयों के सम्बन्ध में भी उनका बोलना एवं लिखना स्वाभाविक ही था। उनके वे विचार बिना संदर्भ के समझे नहीं जा सकते। म० गांधी

ने एक बार कहा था कि 'मुस्लिम इज ए बुली एण्ड हिन्दू इज ए कावर्ड'। पंडित जवाहरलाल नेहरूजी ने अधिकांश मुसलमान भाइयों का समर्थन पाने वाली मुस्लिम लीग की आलोचना की थी। इस प्रकार कहना या इस प्रकार की आलोचना यह किसी एक वृत्ति की आलोचना करने जैसा है। कै० पू० गुरुजी ने मुस्लिम धर्म, मो० पैगम्बर या कुरान तथा ईसाई धर्म तथा ईसामसीह या बाइबिल, इनकी कभी भी आलोचना नहीं की।

अपने भाषण में दो-एक कमीशनों की रिपोर्टों का उल्लेख आपने किया है। उनमें से एकाध वाक्य लेकर संघ का फसादों से सम्बन्ध जोड़ने का प्रयत्न किया है। अब तक कई बार फसादात हुए। उनके सम्बन्धों में कमीशन (आयोग) नियुक्त किये गये। किन्तु उन आयोगों ने उन दंगों के संदर्भ में संघ को निर्दोष घोषित किया है। दंगों के बाद के मुकदमों में भी किसी संघ के स्वयंसेवक व पदाधिकारी को सजा हुई, ऐसा उदाहरण नहीं है।

म० गांधी की हत्या के संदर्भ में आपने सरदार पटेलजी के एक पत्र का उल्लेख किया है। श्री पटेल गृहमंत्री थे और सरकारी नीति का समर्थन करने के लिये उनका वैसा पत्र लिखना स्वाभाविक था। किन्तु उनके पत्रों की प्रकाशित पुस्तक में प्रधानमंत्री को लिखा एक पत्र भी है। जिसमें म० गांधीजी की हत्या से संघ का कुछ भी सम्बन्ध न होने का विश्वास उन्होंने प्रकट किया है। वह पत्र आपकी जानकारी में शायद नहीं आया है।

संघ को आपने फासिस्ट कहा है और फासिज्म माने झूठ का प्रचार ऐसा भी कहा है। अफवाह फैलाने इत्यादि बातें करने का जो आरोप आपने संघ पर लगाया है, वह पूर्णतः निराधार है। अखबारों पर सेन्सरशिप लागू करने के बाद समाज में अनेक अफवाहें फैलती हैं, इस बात की दुनियाँ भर में मिसालें हैं। अतः अफवाह फैलाने का आरोप संघ पर लगाना अनुचित है।

फासिज्म का सम्बन्ध विचारधारा के साथ-साथ कार्यपद्धति से भी होता है। इन दोनों दृष्टियों से संघ का फासिज्म से सम्बन्ध नहीं आता। इटली के फासिस्ट एवं जर्मनी के नाज़ी, दोनों अपने को "नेशनल सोशलिस्ट" कहते थे। संघ की विचारधारा प्रधानतः हिन्दुओं की आध्यात्मिक परम्परा पर आधारित है। कार्यप्रणाली की दृष्टि से फासिस्ट वे ही होते हैं जो अपने को एकदाय न होने वालों पर जुल्म करते हैं। जो सत्ता प्राप्ति का प्रयत्न करते हैं। जो सत्ता प्राप्ति के बाद विरोधियों का बलपूर्वक दमन करते हैं। संघ तो सत्ता की राजनीति से मूलभूतरूप से दूर रहा है। संघ में लोग केवल ध्येय से अनुप्राणित होकर और स्वेच्छा से ही आकृष्ट होते हैं। ऐसी स्थिति में संघ को फासिस्ट कहना सर्वथा अनुचित है।

श्री जयप्रकाश नारायणजी के आन्दोलन के संदर्भ में संघ का नाम लिया गया है। गुजरात आन्दोलन, बिहार आन्दोलन, जिनके सम्बन्ध में सरकार की ओर से संघ का नाम बार-बार और बिना कारण जोड़ा गया, अतः मेरा उसके बारे में कुछ कहना क्रमप्राप्त था। इन आन्दोलनों से संघ का कुछ भी सम्बन्ध नहीं, इसके स्पष्टीकरण में मैंने केवल दो बातें प्रमुखतः कही हैं। एक, वे आन्दोलन जनता में व्याप्त असन्तोष के कारण हुए हैं अतः उसके लिये आप और हम सभी जिम्मेदार हैं। और दूसरी, यह कि श्री जयप्रकाशजी को सी० आई० ए० का एजेण्ट, सरमायेदारों का साथी, देशद्रोही कहना यह ठीक नहीं, अनुचित है। वे भी देशभक्त हैं। आपके भाषणों में भी अनेक बार ऐसे ही विचार कहे गये हैं।

अराजकता के बारे में मैंने अपने हर बार के भाषण में उसका विरोध किया है। संघ और अराजकता—ये परस्पर-विरोधी बातें हैं।

अराजकेषु राष्ट्रेषु धर्मो न व्यवतिष्ठते।
परस्परं च खादन्ति तस्मात् धिक् अराजकम्॥

यह महाभारत का वचन समर्थन में देकर मैंने अराजकता का विरोध एवं निषेध ही किया है।

संघ के सम्बन्ध में किये गये सभी आरोपों का उत्तर देने का यह स्थान नहीं है और पत्र में तो यह सम्भव भी नहीं है। सम्भव हुआ तो मुलाकातों में स्पष्ट किया जा सकता है। फिर भी इतना स्पष्ट करना है कि आपके द्वारा किए गए विधान वास्तविकता से दूर हैं। साँप के बहाने भूमि पीटने जैसे हैं। आपके विधान गलत जानकारी पर आधारित दिखाई देते हैं। संघ के सम्बन्ध में आपकी धारणाएँ दूषित पूर्वाग्रह पर आधारित हैं। राजनीति से सम्बन्धित कुछ लोगों के आपसे मिलकर, आपको गलत या कल्पित जानकारी देने के परिणामस्वरूप ऐसा हुआ होगा।

संघ के पदाधिकारी एवं स्वयंसेवक—ये प्रतिष्ठाप्राप्त नागरिक हैं, ऐसी ही जानकारी आपको एडमिनिस्ट्रेटिव मशीनरी की ओर से मिलती होगी, ऐसा मेरा विश्वास है। अपने-अपने स्थानों पर सार्वजनिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक व तत्सम क्षेत्रों में वे अग्रसर हैं। संघ का कार्य सर्वदा निर्दोष और निर्लेप है, ऐसी ही जानकारी आपको मिलती होगी।

अतएव मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप प्रत्यक्ष वस्तुस्थिति को जानें, दूषित पूर्वाग्रह छोड़ें, संघ के सम्बन्ध में उचित धारणा बनायें, स्थानबद्ध किए हुए संघ के हजारों लोगों को मुक्त करें और संघ पर लगे निर्बंधों को दूर करें। ऐसा करने से संघ के लाखों स्वयंसेवकों की निस्वार्थभाव से कार्य करने की शक्ति सरकारी एवं गैर-सरकारी राष्ट्रोद्धारक कामों में लगेगी और हम सबकी इच्छा के अनुसार अपना देश समृद्ध होगा।

पत्र के उत्तर की अपेक्षा करता हूँ।

भवदीय
मधुकर दत्तात्रेय देवरस

परिशिष्ट-३

आपात्काल में आचार्यकुल सम्मेलन से पूर्व श्री विनोबा भावे को लिखा पत्र

यरवदा मध्यवर्ती कारागृह
पुणे-६
१२-१-७६

पूजनीय आचार्य श्री विनोबाजी की चरण सेवा में,

दिनांक १६, १७, १८ जनवरी ऐसे तीन दिन, आपके मार्गदर्शन में देश के आचार्यों आदि की बैठक होने वाली है, और उसमें वर्तमान बिगड़ी हुई परिस्थिति पर मूलतः विचार होने जा रहा है, ऐसा विदित हुआ है। यह जानकर प्रसन्नता हुई। इस बैठक में वर्तमान आपात्कालीन परिस्थिति में से कुछ मार्ग निकाला जाएगा, ऐसा विश्वास होने लगा है। इस अवसर पर हमारी भूमिका आपको स्पष्ट रूप से मालूम हो, इसलिए यह छोटा-सा पत्र लिख रहा हूँ।

प० पू० श्री गुरुजी के देहावसान के बाद मुझ पर संघ कार्य की जिम्मेदारी आयी। उसके बाद मैं आपके दर्शनार्थ पवनार आया भी था। आपने मुझे दर्शन देकर आशीष दिया था, यह मेरे स्मरण में नित्य रहता है। आपके पुण्यमय आशीष के बल पर मैं अपने पर आयी जिम्मेदारी यथाशक्ति निभाने का प्रयास कर रहा हूँ।

प० पू० श्री गुरुजी का तथा आपका परिचय था ही। समय-समय पर होने वाली आप दोनों की मुलाकातों में देश, काल, परिस्थिति तथा संघ कार्य के सम्बन्ध में बातें भी होती थीं। मैं जब आपके दर्शनार्थ आया था, तब उसी प्रकार बातें हुईं। इतना ही नहीं, "मैं भी संघ का असभ्य सभ्य हूँ" ऐसा मानिए, ऐसा मुझसे कहकर आपने संघ कार्य के लिये आशीष एवं प्रोत्साहन दिया था।

पहले की तरह मेरे संघ कार्य करते रहते अनपेक्षित रूप से संघ पर प्रतिबन्ध लगाया गया और मुझे स्थानबद्ध करके यहाँ यरवदा कारागृह में रखा गया। सारे देश में हजारों कार्यकर्ताओं को विभिन्न स्थानों पर इसी प्रकार से जेलों में ठूँस दिया है।. स्थानबद्ध करने का यह क्रम अभी भी जारी है।

संघ पर लगाया गया यह प्रतिबन्ध और अनेक कार्यकर्ताओं की स्थानबद्धता, यह मेरी दृष्टि में गलत धारणा पर आधारित है। विशेषतः प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को, अनेक सम्बन्धित व्यक्तियों द्वारा संघ के बारे में गलत धारणा कर दी गई है, ऐसा दिखाई देता है। यह गलत धारणा दूर करके संघ कार्य के वास्तविक स्वरूप का दर्शन कर देने का अवसर प्राप्त हुआ नहीं और इसलिये संघ एवं संघ के कार्यकर्ताओं पर यह संकट आया है।

इस कारागृह में से श्रीमती इन्दिरा गांधी को हमारी भूमिका पत्र द्वारा स्पष्ट करने का मैंने दो बार प्रयास किया। किन्तु उस पर विचार हुआ है ऐसा अभी भी दिखाई नहीं देता। इतना ही नहीं, अपितु मेरे पत्रों के मिलने की जानकारी भी मुझे दी नहीं गई।

संघ पर अनेक आरोप लगाये जाते हैं। और संघ की इकतरफा और कठोर आलोचना

भी की जाती है। उस आलोचना में संघ पर किये जाने वाले सभी आरोप एकदम झूठे हैं, निराधार हैं। उन सभी आरोपों का उत्तर देने का प्रयत्न करना यह इस पत्र का हेतु नहीं। संघ का लक्ष्य, उसकी कार्यपद्धति और उसका कार्य, इसकी आपको जानकारी है ही।

संघ हिन्दू-संगठन करना चाहता है, यह बात सत्य है। किन्तु इससे वह सांप्रदायिक वा जातीय नहीं होता। इस देश में हिन्दुत्व का विचार संकुचित व सांप्रदायिक कैसे हो सकता है, यह समझ में नहीं आता। यदि हिन्दुओं का संगठन करते समय अहिन्दुओं के विरुद्ध हम कुछ करते हों, तो बात अलग हो सकती है। अन्य धर्मावलंबियों के विरुद्ध संघ में एक अक्षर भी अनुचित नहीं कहा जाता। उनका किसी प्रकार से भी द्वेष किया अथवा सिखाया नहीं जाता। इतना ही नहीं अपितु कुरान, मोहम्मद पैगम्बर और इस्लाम धर्म, साथ ही बाइबिल, येशु ख्रीस्त और ईसाई धर्म के सम्बन्ध में प० पू० श्री गुरुजी के भाषणों में आदरपूर्वक ही उल्लेख किया गया है। संघ का कार्य इन पचास वर्षों के खुले मैदान पर खुलेतौर से चल रहा है। इस कालावधि में हिन्दू-मुसलमानों में कुछ फसादात भी हुए, पर ऐसे किसी भी फसाद में संघ ने कभी भी भाग नहीं लिया। फसादों के बाद आयोग (कमीशन) नियुक्त किये गये। उनके रिपोर्ट भी आये। पर कभी भी संघ को दोषी नहीं माना गया अथवा किसी पर मुकदमा भी किया नहीं जा सका।

कुछ लोग बिना कारण मान लेते हैं कि संघ हिंसा को प्रोत्साहन देता हैं। पर यह धारणा गलत है। संघ का हिंसाचार पर किंचित्मात्र भी विश्वास नही। संघ ने हिंसाचार कभी किए नहीं, न कभी हिंसाचार को प्रोत्साहन दिया है।

व्यक्ति-व्यक्ति पर सुसंस्कार करना यह संघ का प्रधान कार्य है। संयम तथा अनुशासन के संस्कार संघ स्वयंसेवकों पर किये जाते हैं, अतः उसमें हिंसाचार के लिये स्थान हो ही नहीं सकता। प० पू० श्री गुरुजी तथा मेरे भी भाषणों में हिंसा तथा अराजकता की आलोचना की गई है।

अराजकेषु राष्ट्रेषु धर्मो न व्यवतिष्ठते।
परस्परं च खादन्ति तस्मात् धिक् अराजकम्॥

इस वचन का हवाला देकर अहिंसात्मक, शान्तिमय परिवर्तन पर ही जोर दिया गया है।

संघ पर फासिस्ट होने का आरोप भी लगाया जाता है। किन्तु जो संगठन सत्ता प्राप्ति की राजनीति से सर्वथा दूर है और जिसमें लोग केवल स्वेच्छा और ध्येय से प्रेरित होकर ही आ सकते हैं, और आते हैं, वह संगठन फासिस्ट कैसे हो सकता है?

जो सत्ता व सामर्थ्य का उपयोग करके लोगों में भय निर्माण करते हैं अथवा जुल्म-जोर-जबर्दस्ती करते हैं उन्हें ही फासिस्ट कहा जा सकता है। संघ को कदापि नहीं। संघ की विचारधारा हमारे नैतिक सिद्धान्तों और आध्यात्मिक परम्परा पर आधारित है। ऐसा होने से संघ को फासिस्ट कहना सर्वथा अनुचित, अन्याय्य तथा असत्य है। सत्तास्थानों से दूर रहकर व्यक्ति-व्यक्ति पर संस्कार करके समाज परिवर्तन करने का काम स्वयंसेवी संस्थाओं को करना चाहिए, ऐसी ही हमारी विचारधारा एवं व्यवहार है, यह आपको विदित है ही। अस्तु।

देश की वर्तमान विकट परिस्थिति के सम्बन्ध में आप तथा देश के विद्वज्जन अब विचार करने वाले हैं। स्वाभाविक है, रा० स्व० संघ के सम्बन्ध में अब चर्चा होगी। संघ के बारे में आप तो सब कुछ जानते हैं। अतएव प्रार्थना है कि आप अग्रसर होकर ऐसा योग्य मार्ग निकालें जिससे संघ पूर्ववत् काम कर सके, ताकि उसकी शक्ति रचनात्मक काम के उपयोग में आ सके।

आपका आशीर्वाद रहे यही प्रार्थना।

प्रति–
आचार्य श्री विनोबा भावे,
पवनार आश्रम, वर्धा,
ता॰लुका व जि० वर्धा

भवदीय
मधुकर दत्तात्रेय देवरस

परिशिष्ट-४

आचार्यकुल सम्मेलन के बाद श्री विनोबा भावे को लिखा पत्र

मधुकर दत्तात्रेय देवरस
सेंट जार्ज्स हास्पिटल,
प्रिज़न वार्ड नं. १४ मुंबई

पूजनीय आचार्य श्री विनोबाजी की
चरण सेवा में

मैंने आपको दिनांक १२.१.७६ को यवरदा कारागृह से एक पत्र लिखा था। पवनार में आचार्यों की बैठक शुरू होने के समय वह आपको मिला होगा, ऐसी आशा है। उस पत्र में आज संघ पर जो आरोप किये जाते हैं, उनके विषय में संघ का क्या कहना है, यह मैंने लिखा था और आपसे प्रार्थना की थी कि संघ के ऊपर का प्रतिबन्ध हटे, इसके लिये आप पहल करें।

आपके मार्गदर्शन में आचार्यों की बैठक में जो विचारमंथन हुआ और सर्वसम्मत निर्णय हुए, वे अखबारों में पढ़ने को मिले और उसके कारण सभी बन्धुओं के मन में अच्छे भविष्य के विषय में आशा बँधी।

जहाँ तक मुझे याद है, मैं समझता हूँ कि आपकी और श्रीगुरुजी की केलझर में (नागपुर-वर्धा रोड) मुलाकात हुई थी। आपने गुरुजी से जब पूछा कि अन्य धर्मों के विषय में आपका दृष्टिकोण सहिष्णुता का है या नहीं, तो श्रीगुरुजी ने कहा था कि हम अन्य धर्मों के विषय में सहिष्णुता का भाव ही लेकर नहीं चलते, अपितु उन धर्मों का आदर भी करते हैं।

आपने उत्तर प्रदेश, बिहार तथा अन्य प्रान्तों में भू-दान के निमित्त जब पदयात्रा की तब स्वयंसेवक बन्धु आपसे सर्वत्र मिले और आपके वहाँ के कार्यक्रमों में सम्मिलित हुए। संघ के स्वयंसेवकों का व्यवहार और विचार इससे आप भली-भाँति परिचित हैं।

अखबारों में आया है कि माननीय प्रधानमंत्री आपको पवनार आश्रम में दि० २४ को मिलने वाली हैं। उस समय देश की आज की परिस्थिति के विषय में चर्चा होगी। मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप प्रधानमंत्री को संघ के विषय में जो गलत धारणा है, उसे दूर करने का प्रयास करें और उसके फलस्वरूप संघ के स्वयंसेवक कारागृह से मुक्त हों, संघ के ऊपर का प्रतिबन्ध उठे और आज देश में जो सभी क्षेत्रों में उन्नति की योजनायें प्रधानमंत्री के नेतृत्व में चल रही हैं उसमें संघ और संघ के स्वयंसेवक भी अपना योगदान दे सकें, ऐसी स्थिति का निर्माण हो।

आपका आशीर्वाद रहे, यही प्रार्थना है।

भवदीय
मधुकर दत्तात्रेय देवरस
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

पुनश्च.....
दि० १२. १. ७६ का पत्र शायद मिला न हो इसलिये उसकी प्रतिलिपि भेज रहा हूँ।
म० द० देवरस

प्रति–
आचार्य श्री विनोबा भावे
पवनार आश्रम, वर्धा
ता॰लुका व जिल्हा वर्धा.

❐

परिशिष्ट-५

जमशेदपुर का भाषण

१ अप्रैल, १९७९ को जमशेदपुर (बिहार) के रीगल मैदान में यह सार्वजनिक भाषण हुआ। इसके दस दिन बाद ११ अप्रैल को रामनवमी थी। रामनवमी के जलूस पर नए पुरुलिया मार्ग और मार्ग क्र० ७ के चौराहे पर एकत्रित मुसलमानों ने ईंट-पत्थर फेंकने शुरू कर दिए। जुलूस के लोगों ने कोई प्रतिकार नहीं किया। आगे चलकर मार्ग क्र० ३ के चौराहे के पास पुनः मुसलमानों द्वारा ईंट-पत्थर के साथ-साथ बम, बोतल बम और अन्य विस्फोटक पदार्थ फेंके जाने लगे और इसी के बाद जमशेदपुर में दंगा शुरू हो गया जो १४ अप्रैल तक चलता रहा, जिसमें १०८ व्यक्ति मारे गए।

सत्तावादी राजनीतिज्ञों द्वारा तुरन्त आरोप लगा दिया गया कि यह दंगा बालासाहब के भाषण के कारण हुआ है जबकि इसका मूल कारण था डेढ़ माह पूर्व एक कुख्यात अपराधी अनवर मियां की पुलिस मुठभेड़ में मृत्यु। बिहार सरकार द्वारा इन दंगों की जांच के लिए गठित जितेन्द्रनारायण आयोग ने भी बाद में शायद सत्तावादी राजनीतिज्ञों को खुश करने के लिए बालासाहब के भाषण को उग्र भावनाएं भड़काने वाला करार दिया, जबकि टेप किए गए और शब्दशः मुद्रित उस पूरे भाषण को आयोग ने रिकार्ड में ही नहीं लिया था। अतः इस भाषण की ऐतिहासिकता को देखते हुए हम इस टेपांकित भाषण को शब्दशः ज्यों-का-त्यों (बिना किसी सम्पादन) के यहां दे रहे हैं।

इस क्षेत्र के कार्यकर्त्ताओं का यहाँ सम्मेलन हो रहा है, उस सम्मेलन में मुझे उपस्थित होना था। तो यहाँ के कार्यकर्त्ताओं ने ऐसा सोचा कि यहाँ सार्वजनिक कार्यक्रम भी हो, बंधुओं को निमंत्रित किया जाय और उनके सामने मैं संघ के विषय में कुछ बोलूँ।

आजकल संघ सर्वत्र चर्चा का प्रमुख विषय बना है। लोग संघ के बारे में सोचते थे, और कुछ मात्रा में वह सच भी था कि संघ प्रसिद्धि-पराङ्मुख है। किन्तु अब हमारी जो प्रसिद्धि हो रही है, वह इतनी हो रही है कि उसका वर्णन अगर हम अंग्रेजी में करें–'पब्लिसिटी इन दी वेन्जीयन्स' तो वह सच होगा। राजनीतिक दल, राजनीतिक नेता तथा अनेक अखबार, संघ के विषय में कुछ न कुछ रोज कहते हैं, लिखते हैं। कई राजनीतिक नेताओं की तो हालत ऐसी है कि अगर वे संघ के बारे में कुछ नहीं कहेंगे, तो शायद उनको रात को नींद भी ठीक से नहीं आयेगी। संघ का कार्य सार्वजनिक कार्य है, इसलिए इस कार्य के विषय में लिखने का और बोलने का सभी को हक है। इतना ही नहीं, जो इससे असहमत हैं उनको भी इसका विरोध करने का हक है। हमें अपनी रीति से काम करने का हक है, उनको, अगर वे असहमत हैं, तो विरोध करने का भी हक है।

लेकिन विरोध जो होना चाहिए, वह वैचारिक स्तर पर होना चाहिए। जनता के सामने जाओ, भाषण दो, लेख लिखो और जिस विषय में संघ के बारे में आप असहमत हैं, उसका प्रचार करो। इस देश में लोकतंत्र है। लोकतंत्र रहे ऐसा हम चाहते हैं। तो हमें काम करने का अधिकार है और जो हमसे असहमत हैं उनको विरोध करने का अधिकार है। लेकिन विरोध "बाई फेयर मीन्स और फाउल" यह लोकतंत्र को शोभा नहीं देता। किसी भी तरीके